श्रीः ।

पंचांगदीपिका ।

और

नष्टजन्मांगदीपिका ।

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष- "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,

बम्बई.

संवत् १९८९, शके १८५४.

॥ श्रीः ॥

पंचांगदीपिका ।

विना पत्राके पत्रा बनानेकी युक्ति.

श्रीमत्पंडितविद्वद्वरवाचस्पाति त्रिपाठी रचित,

क्षेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष-"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,

बम्बई.

संवत् १९८९, शके १८५४.

मुद्रक और प्रकाशक—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

मालिक—"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, बम्बई.

निवेदन ।

इन दिनोंमें तिथिपत्रके बनानेवाले पंडित कहीं हजारमें एक दो हैं. वे लोग गणित कर बडे परिश्रमसे बहुत दिनोंमें तिथिपत्र बना सकते हैं या पूंछनेसे कुछ दिनमें कह सकते हैं;अब जिले हर्दोई तहसील संदीला थाना डाकखाना अतरौली परगने गोडवा ग्राम गोनीके रहनेवाले महाराज त्रिपाठी जीवरक्षणसुत पंडित वाचस्पतिज्योतिर्वित्तिलकने स्वेष्टदेवकी सहायतासे अनेक ज्योतिषकी पुस्तकोंका सारांश लेकर समस्त द्विजातियोंके उपकारार्थ " पंचाङ्गदीपिका " नाम यह पुस्तक संस्कृत व भाषा काव्य टीका उदाहरण समेत बहुतही सरल बनाया है जिसके अभ्यास करनेवाले मनुष्य सहजहीमें तिथि वार नक्षत्र योग करणादि पञ्चांगको पूँछनेसे जल्दी कह सकते हैं.ऐसी पुस्तक अबतक कहीं नहीं छपी थी और लोगोंको इसकी बहुत ही आवश्यकता थी अतः उन लोगोंके

निमित्त इस यन्त्रालयमें छापी गई. अब यह लिखते हैं कि, सब लोग इस बातको अवश्य याद रक्खें कि तिथिवारादिकोंके कहनेके समयमें किसीके आगे इस पुस्तकका श्लोक या भाषाछंद कोई कभी न सुनावे केवल मनमें तिथ्यादिकोंको कह देवे क्योंकि जिसमें और लोग समीपके बैठनेवाले इन सहज कुंजियोंको न जानें, नहीं तो कोई २ जड मनुष्य कहेंगे इसमें कुछ नहीं है. अब सबसे मेरी प्रथम यह प्रार्थना है कि, इस ग्रन्थको प्रायः आद्योपांत देख अजमाय सहज समझ मुझे अवश्य आशीर्वाद दें और जो महाशय इसमें कहीं भूल चूक पावें वे मुझे पत्रद्वारा सूचित करें. मैं उनको बहुत धन्यवाद देता हुआ सदैव कृतज्ञ रहूंगा. शुभमस्तु।

निवेदक—

खेमराज श्रीकृष्णदास,
" श्रीवेंकटेश्वर " (स्टीम्), प्रेस,
मुंबई.

अथ पञ्चांगदीपिका.

दोहा ।

विघ्नहरण गजकरणके, चरण शरणमें जाय ।
अब पञ्चांगसुदीपिका, वरणौं छन्द बनाय ॥ १ ॥

विघ्नके हरनेवाले श्रीगणेशजीके चरणारविंदोंके शरणमें जायके मैं अब स्वकृत दोहा चौपाई आदि छंदोंमें "पंचांगदीपिका" नाम इस ग्रन्थको वर्णन करता हूं॥ १ ॥

तिथि अरु वार नक्षत्र पुनि, योग करण विधिमानु।
वाचस्पति पंडित कहत, बिनपत्रा सब जानु ॥२॥

कि, प्रतिपदादि पंद्रहों तिथि और ऐतवारसे सातों वार और अश्विन्यादि सत्ताईसों नक्षत्र और विष्कम्भादि सताईसों योग आर बवादि ग्यारहों करण ये पांचों कालात्मक ईश्वरके अनुवर्ती देवगण इस संसारमें दिन प्रति रोज २ अपनी २ अमलदारीको करते आते जाते हैं. इन्हीं तिथ्यादिकोंको ज्योतिषी लोग पत्रा देखकर बताते हैं.अब मैं वाचस्पतिनाम पंडित कहता हूं कि, विना पत्रा देखे रोज २ के तिथि वार नक्षत्र योग करणोंको यथार्थ मनमें जान बहुत जल्दीमें पूछनेवालेको बतादे वही युक्ति मैं अब लिखता हूँ ॥ २ ॥

मासभाच्चन्द्रभं गण्यं संख्या यावत्प्र-वर्तते ॥ तावत्तिथिं विजानीयाद्वाच-स्पतिसुशोधितम् ॥ १ ॥

दो०—मास नखतते जै नखत, वर्तमानलग होइ ।
ते पहिले गनि लीजिये, तिथी जानिये सोइ १॥

पाहिले विना पत्रा रोज २ की तिथिके विचारनेकी युक्ति कहते हैं कि महीनेका पौर्णमासी बीती हुईके आगेके नक्ष-त्रसे जिस दिनकी कोई तिथि पूंछै तो उस दिनके नक्षत्रतक गिनै जे हों वही तिथि कृष्णपक्षकी परीवासे गनिके कहै। अब मासनक्षत्र। चैतीको चित्रा, वैशाखीको विशाखा, ज्येष्ठीको ज्ये-ष्ठा, आषाढीको पूर्वाषाढा, श्रावणीको श्रवण धनिष्ठासे, भदईको पूर्वाभाद्रपद उत्तराभाद्रपदासे, कुँआरीको अश्विनी, कार्त्ति-कीको कृत्तिका, अगहनीको मृगशिर आर्द्रा, पूषीको पुष्य, माघीको मघा, फगुईको उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र सदा होती हैं (उदाहरण) जैसे किसीने पूछा कि, संवत् १९५१ के साल आषाढके महीनेमें हस्त नक्षत्रको कौन तिथि होगी तो देखा कि मासनक्षत्र ज्येष्ठाके दिन ज्येष्ठा है तिसके आगे नक्षत्र मूल दूसरा तिससे हस्ततक गिना तो २२ भये फिर आषाढके कृष्ण

पक्षकी परीवासे बाईस तक देखा कि बाईको कोई तिथि नहीं होती है इससे देखा कि१५ और ७ बाईस होते हैं तो मालुम होगया कि१५ तिथियोंसे कृष्णपक्ष आषाढका बीत गया और जो ७ बचे तो शुक्लपक्षकी सप्तमी ठहरी, तो उस पूंछने-वालेसे कहो कि शुक्लपक्षकी सप्तमी है पत्रामें देखले ॥ १ ॥

साद्धैकघ्नं मधोर्मासं गतपक्षादिनैर्युतम् ॥ मुनिभक्तं गणेच्छेषं राज्ञो वै वासरं भवेत् ॥ २ ॥

सवैया–सिंहावलोकन ।

पाइबो चैतसे डेवढेके गनि मास गये दिन जोरि मिलाइबो । लाइबो सातसों भाग लगाइ बचें तिन अंकलौं खोज लगाइबो ॥ गाइबो संवत्के नृपते गनि शेषलों बीच सभामें सुनाइबो । नाइबो है शिर ज्योतिषके विनदै सबकी जगमें यश पाइबो ॥ २॥

विना पत्रा वार बतानेकी युक्ति ।

चैत्र शुक्लकी परीवासे महीना गत गिनके डेवढा करे फिर वर्तमान मास पक्षके बीते हुए दिन उसीमें जोड दे और सातका

भाग ले जो शेष बचैं वह वार जानो राजासे चैत्र शुक्ल परीवाका जो दिन हो सो राजा कहाता है साल भरतक. (उदाहरण) जैसे किसीने कहा कि अच्छा इसी १९५१ के सालमें श्रावण वदी पंचमीको बतावो कौन दिन है? यहां चैत्रशुक्ल परीवासे गिना तो आषाढवदी अमावस तकके ३ महीने हुए ३नको डेवढे किया तो तीन डेवढे साढे चार४॥हुए गत पक्ष आषाढी तकके १५ दिन और श्रावण वदी पंचमीतकके गत दिन चार४सब एकमें जोडे तो १९ हुए उसमें महीनोंके डेवढे अंक४॥साढे-चार उसीमें जोडे तो २३॥हुए उसमें सातका भाग लिया तो सातातियां २१और २॥साढे२३॥ तेईस होते तो२॥ बचे फिर उस सालके राजा शनैश्चरसे गिना तो अढाई पर सोमवार-की दुपहर ठहरी तो कहो कि सोमवार है पत्रामें देखले॥२॥

मासभात्तिथिपर्यंतं यावत्संख्या प्रव-र्तते ॥ तावत्संख्याकनक्षत्रं वाचस्प-तिविचारितम् ॥ ३॥

दो॰—गनिये मास नक्षत्रसे, वर्तमान तिथि यत्र । जितने पर गनि तिथिमिलै, तितने पर नक्षत्र३॥

अथ राजचक्रम् ।

संवत्.	संवत्.	संवत्
१८४७	६५ चंद्र.	८३ श.
४८ चं.	६६	८४ बु.
४९ शु.	६७ बृ.	८५ र.
५० शु.	६८	८६ श.
५१ मं.	६९ श.	८७ बृ.
५२	७० शु.	८८ मं.
५३ शु.	७१ मं.	८९ चं.
५४ बु.	७२ चं.	९० शु.
५५	७३ शु.	९१ बृ.
५६	७४ मं.	९२ चं.
५७ बु.		९३ शु.
५८ र.	७६ शु.	९४ बृ.
५९ श.	७७ बु.	९५ चं.
६० बृ.	७८ मं.	९६ श.
६१ बु.	७९	९७ शु.
६२	८० श.	९८ बु.
६३	८१ बु.	९९ चं.
६४	८२ र.	१०० शु.

संवत्.	संवत्.	संवत्.
०१ मं.	२० शु.	३९ चं.
०२ श.	२१ बृ.	४० र.
०३ श.	२२ मं.	४१ शु.
०४ बु.	२३ श.	४२ मं.
०५ मं.	२४ शु.	४३ चं.
०६ र.	२५ बु,	४४ शु.
०७ बृ.	२६ र.	४५ बृ.
०८ बु.	२७ श.	४६ चं.
०९ र.	२८ बु.	४७ शु.
१० श.	२९ चं.	४८ बृ.
११ बु.	३० श.	४९ मं.
१२ चं.	३१ बृ.	५० र.
१३ र.	३२ बु.	५१ श.
१४ बृ.	३३ र.	५२ बु.
१५ मं.	३४ शु.	५३ र.
१६ चं.	३५ बु.	५४
१७ श.	३६ र.	५५
१८ बृ.	३७ श.	५६
१९ चं.	३८ बु.	५७

पंचांग विना नक्षत्र जाननेकी युक्ति।

महीनेका जो नक्षत्र है उस नक्षत्रके आगेके नक्षत्रसे जिस महीनेके जिस पक्षकी जिस तिथिके नक्षत्रको कोई पूंछे उस तिथिकी गिनतीतक गिने,जितने हों उतने संख्या गिनें नक्षत्र कहे. उदाहरण–जैसे किसीने पूंछा कि संवत् १९९१में श्रावण शुक्ल द्वीजको कौन नक्षत्र होगा तो विचारमें देखा कि श्रावणके महीनेमें तो पूंछते ही हैं इससे उसको छोडदिया और उसके पहिले आषाढीका मास नक्षत्र पूर्वाषाढ है उसके आगे उत्तराषाढसे श्रावण शुक्ल द्वीज तक गिना तो अमावस तकके १५दिन और शुक्लकी द्वीजतकके दो दिन सब जोडके १७ हुए तो सत्रहवां १७ मघा नक्षत्र ठहरा, पत्रांमें देख ले जरूर होगा ॥ ३ ॥

पंचांग विना विष्कुंभादि योग बनानेकी युक्ति।

गण्या च पुष्याद्द्युमणेस्समृक्षं श्रोत्रात्तथा चांद्रभमत्र युक्तम्। भजेत्पुनः सप्तसु विंशकेन शेषे क्रमाद्वै प्रवदेच्च योगान् ॥ ४ ॥

दोधकछन्द ।

पुष्यते भानु नक्षत्र गनीजै । श्रवणते चन्द्र ऋक्ष धरि लीजै ॥ जोडकर भाग सताइस लेहू ॥ विष्कम्भादियोग कहि देहू ॥ ४ ॥

पुष्य नक्षत्रसे जिस दिनके योग कोई पूछे तो उन दिनोंके सूर्यके नक्षत्रतक गिने और वैसेही श्रवण नक्षत्रसे जिस दिनका योग पूंछा गया है उसी दिनके नक्षत्रतक गिन सब एकमें जोड २७सत्ताईससे भागले शेष बची संख्यातकविष्कंभसेगिनयोग बतावे । उदाहरण--जैसे किसीने पूंछा कि संवत्१९९१मेंउसी श्रावण सुदी शुक्रवारद्वीजमघा नक्षत्रको विष्कंभादिकोंमेंसेकौन योग होगा?तब उससे पूंछा कि उन दिनोंमें सूर्य किस नक्षत्रके हैं?उसने कहा आश्लेषाके,तब पुष्यसे आश्लेषातक गिने तो दो हुए तो यहां सत्ताईसका भाग नहीं लगा,वैसेही श्रवण नक्षत्रमें उस दिनके नक्षत्र मघा तक गिना तो १६ हुए सर्व एकमें जोडे१८हुए तब विष्कंभसे गिना तो अठारहवां: वरी. यान् योग ठहरा तिथि पत्रामें देखले अवश्यही होगा॥४॥

पंचांग विना करण बनानेकी युक्ति ।

तिथिं च द्विगुणीकृत्य त्वेकहीनं च कारयेत् ॥ सप्तभिश्च हरेद्भागं शेषं कर-

णमादिशेत् ॥ ५ ॥शुक्लस्य या वै प्रति-
पञ्च तस्यां किंस्तुघ्नकर्णस्तु परे बवश्च॥
कृष्णे परे शम्भु १४ तिथौ च शाकुनि-
श्चतुष्पदो नागयुतस्त्वमायाम् ॥ ६ ॥

दोहा ।

तिथि धरि दूनी एक पुनि, जो ऊनी करि देइ ।
भाजि सातसों शेष क्रम,करण अन्त तिथी लेइ५॥
शुक्ल एक किंस्तुघ्न बव, कृष्ण चतुर्दशि भाग ।
पश्चिममें शकुनी करण, अमा चतुष्पद नाग ॥६॥

जिस दिनका करण जानना हो उस दिनकी तिथिको शुक्ल-पक्षकी परीवासे गिन दूना करे और सातसे भाग ले जो शेष बचे बवादि सात ७ चर करण नामक करण जानो और उस पूछनेवालेसे कहो कि पूंछी हुई तिथिके परार्धमें मिलेगा और पूर्वार्द्धमें उसके पहिलेका करण होगा और शुक्लपक्षकी परी-वाके पूर्वार्द्धमें और कृष्णपक्षकी चौदसके परार्द्धमें और अमावसको इन सात चर करणोंमेंसे कोई करण नहीं मिलेगा क्योंकि इनमें सदैव स्थिर करण होते हैं सो आगेके श्लोकमे

लिखते हैं, देख लीजिये अब चारों स्थिर करण जाननेकी युक्ति लिखते हैं कि सदा शुक्लपक्षकी परीवाको पूर्वार्धमें किंस्तुघ्न और परार्द्धमें बवकरण होता है और ऐसेही कृष्ण-पक्षकी चौदसके परार्द्धमें शकुनि करण होता है अमावसके पूर्वार्द्धमें चतुष्पद और परार्द्धमें नाग नाम करण होता है उदाहरण-जैसे किसीने कहा कि अच्छा बताओ कि संवत् १९५१ में श्रावणीको कौन करण होगा? अब यहां देखो कि शुक्लपक्षकी परीवासे गिना तो पूर्णमासी तक १५ अंक हुए इनको दूना किया ३० हुए उसमें १ एक कम करादिया तो २९ रहे. उसमें ७ सातसे भाग लिया तो सातचौक अट्ठाइस, शेष एक रहा तो यहां पहिले बवकरणसे गिना तो करण ही पौर्णमासीके परार्द्धमें ठहरा और उसके पूर्वार्द्धमें उसके पहि-लेका विष्टि नाम करण अर्थात् भद्रा होगी इन ग्यारहों कर-णोंको तिथ्यर्द्ध कहते हैं क्योंकि एक करण आधी तिथिको भोगता है फिर इसी तरह उसके आगेका दूसरा करण भोगता है ॥ ५ ॥ ६ ॥

इदं तु वाचस्पतिना त्रिपाठिना
कृतं हि गानीग्रुणिग्रामवासिना॥
संशोधयंत्वेव सुबालशिक्षणं

क्षमाप्य सर्वं मम साहसं बुधाः॥७॥
भूबाणनंदचंद्राब्दे वैक्रमे दशमे मया॥
धातृनक्षत्रगे सूर्ये कृतं पंचांगवर्तनम्॥८

यह " पञ्चांगदीपिका " नामक पुस्तक मुझ पंडित वाचस्पति नाम तेवारी गोनी ग्रामके रहनेवालेने बालबुद्धियोंके उपकारार्थ बडे परिश्रमसे बनाई है विद्वज्जन इसे देख और भलीभांति शोध मेरे श्रमको सफल करें औरमेरे साहसको क्षमा करें ॥ ७ ॥ वैक्रमीय संवत् १९५१ में रोहिणी नक्षत्रके सूर्यमें अश्विनी नक्षत्रको यह पञ्चाङ्ग वर्तनकी पुस्तक मैंने बनाई , या दूसरे अर्थसे इसी श्लोकमें इस पुस्तक बनानेके समयका पंचांग यथा वार नक्षत्र योग तिथि करण कह दिया जिसको उत्तम ज्योतिषी पंडित लोग भली भांति जानकर मेरे श्रमको सफल करेंगे और पंचांग भी कह सकेंगे जिससे ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी बृहस्पति सौभाग्य योग बालव करण स्पष्ट होता है ॥ ८ ॥

इति श्रीमत्पंडितवाचस्पतित्रिपाठिविरचिता पंचांगदीपिका
समाप्ता । शुभमस्तुतराम् ।
श्रीकृष्णार्पणमस्तु दीर्घायुरस्तु शुभमस्तु ।

इसके आगे अंग्रेजी तारीख मास वार सन् और इनके जाननेके वास्ते "क्यालेंडर" लगाया गया है ।

इति

पंचांगदीपिका

समाप्ता ।

ओ ३ म् हरिः ।

नष्टजन्मांगदीपिका ।

जिसमें

सहजही शीघ्रतासे नष्टकुण्डलीके बतानेकी युक्ति जन्मांगचक्रसे सम्पूर्ण कही है.

जिससे

सम्वत्, शाका, सन्, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण, इष्ट, इष्टशोधन, दिनरात्रिका जन्म, कन्या पुत्रका जन्मपत्र, मृत जीवितकी जन्मपत्री, स्त्रीपुरुषमें प्रथम मृतकका परिज्ञान, जन्मांगसे गर्भ, गर्भवतीप्रश्न, गुमातिलादिकथन, अनेक अनेक गुप्तचिह्न शीघ्र मालूम होते हैं।

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष--"श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,

बम्बई.

संवत् १९८९, शके १८५४.

सूचना.

श्रीमत् परमोदार, मित्रवर्य पण्डित ललिताप्रसाद शुक्ल व रामलाल, भगवान्दीनकी आज्ञासे श्रीयुत पण्डित वाचस्पति ज्योतिर्वित्तिलक गोनीग्रामनिवासीने स्वेष्टदेवकी सहायतासे भृगुसंहिता, गर्गमनोरमादि अनेक पुस्तकोंका सारांश लेकर, समस्त द्विजातियोंके उपकरार्थ अतिसरल श्लोक दोहा आदि ललित छन्द उदाहरणसमेत इसकी रचना की.

विज्ञापन।

इन दिनोंमें नष्टजन्मकुण्डली वर्तनेवाला पण्डित हजारमें कहीं एक सुन पडेगा, उसमें परखने पर ढोलके भीतर पोलही ठहरेगा क्योंकि नष्टको वर्तना बहुतसी ज्योतिषकी पुस्तकोंमें था और कोई२जानते भी थे परंच जो छिपाने व न बतानेके कारणसे जाता रहा.अब कुछ मैंने बडे परिश्रमसे इकट्ठा किया उसे सर्व साधारणके ज्ञानार्थ प्रगट करता हूँ क्योंकि संसारमें जीवन थोडे रोजके वास्ते है,न मालूम चोला कब छूट जावे यदि विदित होजायगा तो ब्राह्मणोंको बहुत उपकारी होगा.अब केवल जन्मांगचक्रसे क्षणमात्रमें कुल नष्टकुण्डली देना अर्थात् विना लिखे देखे विना जाने समझे जन्मका संवत्, शक,सन्,हिजरी,फसली, अयन,ऋतु,मास,पक्ष,तिथि,वार,नक्षत्र,योग,करण,इष्ट, इष्टशोधन,दिनरात्रिका ज्ञान. कन्या पुत्रकी जन्मपत्री स्त्री पुरुषोंमें प्रथम मृत्युज्ञान,जन्मते गर्भ, कन्या पुत्र भवितव्य, लिंगयोनिस्थ तिलकथनादि समस्त जन्मके हालको शीघ्र कह देनेवाली कोई ऐसी पुस्तक अबतक

नहीं छपीथी. और लोगोंको इसकी बहुत ही आवश्यकता थी अतः उनके निमित्त "नष्टजन्मांगदीपिका" नामक यह पुस्तक नाना प्रकारके ललित छंदोंसे, संस्कृत व भाषा, काव्य टीका उदाहरणसमेत बहुतही सरल रची गयी है, कि जिससे जो संस्कृतज्ञ हैं वे संस्कृतसे और जो भाषा-काव्यके जाननेवाले हैं वे भाषाकाव्यसे और जिनको बहुत ही कम बोध है वे उदाहरणसे सब समझेंगे, परंच सब लोग यह जरूर याद रक्खें कि नष्ट वर्तते समय इस पुस्तकका श्लोक या भाषा छन्द कोई न पढैं सिर्फ मनमें समझ गुनके नष्ट वर्त दे, जिससे समीपके बैठनेवाले और लोग इन सहज कुंजियोंको न जाने नहीं तो कोई२ जडजीव कहेंगे किइसमें कुछ नहीं है. अब प्रार्थना यह है कि जो महाशय इसमें कहीं भूल चूक पावें वे मुझे सूचित पत्रद्वारा करें तो मैं उनको बहुत धन्यवाद दूंगा दूसरे यह कि कोई महाशय इस मेरे ग्रंथको पावें तो आद्योपांत देख सहज कुंजी जान अजमाकर प्रसन्न हो मुझको अवश्य आशीर्वाद देवें. किं बहुना बहुज्ञेषु । शुभमस्तुतराम् ।

अथ

नष्टजन्मांगदीपिका.

विघ्नेश्वरं नमस्कृत्य स्वेष्टदेवं च भारतीम्॥कुर्वे द्विजहितार्थाय नष्टजन्मांगदीपिकाम् ॥ १ ॥

दोहा ।

श्रीगणपति अरु भारती, इष्टदेव शिर नाय ।
द्विजहित नष्ट सुदीपिका, वरणौं अतिसुखदाय १॥

प्रथम गणेशजी,इष्टदेव अर्थात् लक्ष्मी नारायण और सरस्वतीजीको नमस्कार करके ब्राह्मणोंके हितके वास्ते नष्टजन्मांगदीपिका नाम यह पुस्तक मैं बनाता हूं ॥ १ ॥

तथापि कीटास्ते स्पष्टं क्रूरा यद्यपि नो मृताः ॥ नहियूकभयाल्लोकः कंथां त्यजति निर्भयः ॥ २ ॥

दोहा ।

यदपि क्रूर बहु जियति जग, तदपि खुलासा योग ।
जूकनकी भय समझि नहिं, आसन त्यागत लोग ॥

यद्यपि क्रूर मनुष्य अभी मरे नहीं हैं तथापि निडर होकर इसको खुलासा करता हू जैसे निर्भय मनुष्य जुएँ और खट-मलोंके डरसे अपने बिछानेवाले वस्त्रको नहीं त्यागते हैं ॥२॥

गोनिग्रामे नैमिषादग्निकोणे सप्तक्रोशे वर्तते मे निवासः । यस्योत्कृष्टं नाम वाचस्पतीति वेदत्रय्यां यस्त्रिपाठित्व-माप ॥ ३ ॥

दो०—साढे दशघर कश्यपी, कहे तिवारी जौन ।
गल्हू वरुवा श्रेष्ठ घर, अहइ मोर कुलतौन ३

कुं०-नेरे मेरो स्थान है, सात कोस परमान ।
नैमिषसे अग्नेय दिशि, बसत जहां गुणवान ॥
बसत जहां गुणवान मान जाहिर जग जानहु ।
सन्दीला तहसील सदर हरदोई मानहु ॥

कहि वाचस्पति पास, परगना गोंडवाकेरे ।
गोनी मेरो स्थान,थान अतरौली नेरे ॥ ३ ॥

अब मैं अपना पता लिखताहूं कि गोनीमें मेरा मकान है, नैमिषारण्यसे सात कोसपर अग्निकोणकी तरफ मैं वाचस्पति नाम गल्हूका तेवारी हूँ.अब चिट्ठीके पहुँचनेका पता लिखता हूं जिला हरदोई, तहसील संदीला, थाने अतरौली, परगने गोंडवा, साकिन गोनीमें पावें पंडित वाचस्पति ॥ ३ ॥

यथामति करिष्यामि विप्राणामुपजी-
वनम् । सुशोधनीयं विद्वद्भिः क्षान्त्वा
च मम साहसम् ॥ ४ ॥

चौ०--जे द्विज देखहिं काव्य हमारी । तिनके चरण शीश हम धारी ॥ द्विजते इतर विलोकहिं कोई । मम अनेक आशिष तिन होई ॥ जो कछु भूल चूक मम देखैं । क्षमि अपराध शुद्ध करि लेखैं॥ छन्दभंग आदिक परिजावै । द्विज हित जानि न मोहि सतावै ॥ ४ ॥

मैं अपनी बुद्धिके अनुसार ब्राह्मणोंकी आजीविकाके

वास्ते इस ग्रन्थको बनाता हूं, विद्वान लोग शोध लेवें और मेरे साहसको क्षमा करैं ॥ ४ ॥

शून्येषुनन्दचंद्राख्ये वर्षे श्रीविक्रमाद्धते । चैत्रासितदशम्यां च ग्रन्थारंभः कृतो मया ॥ ५ ॥

दो०—एक सहस नौ सैकरा, संवत् और पचाश। चैत कृष्ण एकादशी, कीन्ह्यो ग्रन्थ प्रकाश ५॥

संवत् १९५० चैत्रकृष्ण एकादशीको इस ग्रन्थ द्वारा नष्ट वर्तनेकी युक्ति प्रकाश की ॥ ५ ॥

जन्मांगकुण्डलीचक्रं युक्त्या संपृच्छयेद्बुधः । ज्ञात्वा शुद्धं ग्रहैस्तस्माद्वर्षमासादिकान्वदेत् ॥ ६ ॥

द्रुतविलंबितछन्द ।

जनम अंगक चक्र सुशोधिकै। युगुति मे सब पूँछि सुबोधिकै ॥ ग्रहनमें फिरि शुद्ध विचारिये। वरष आदिक सर्व प्रचारिये ॥ ६ ॥

अब जिसकी नष्टकुण्डलीवर्तना चाहे उसके जन्मांगचक्रके दो चार ग्रह युक्तिसे उससे पूंछ लेवै प्रथम यह पूंछे कि

तुम अपनी जन्मकुण्डलीका कोईसा एक ग्रह बताओ कि किस राशिके किस घरमें हैऔर अपनी राशिका नाम व चन्द्रमा बताओ कहां है और तुम्हारा किस महीनेका जन्म और सूर्य कहां हैऔर शनि बृहस्पति राहु कहां हैं या केवल जन्मांग चक्र दे दो बस इसीसे नष्ट वर्ष मासादि बन जायँगे. जो वर्षादिकोंका ग्रहोंसे परस्पर सम्बन्ध न बँधे तो उसकी बताई बातें या उसका दिया जन्मांग चक्र अशुद्ध है.

उदाहरण–जैसे किसीने पूछा कि तुम्हारा किस महीनेका जन्म है और कुण्डलीमें सूर्य किस घरमें है ?उन्होंने कहा कि ज्येष्ठका जन्म और लग्नमें सूर्य है. बस इसीसे मालूम हुआ कि वृष लग्नके सूर्य हैं क्योंकि सदा मेषके सूर्य वैशाखमें और वृषके ज्येष्ठमें होते हैं ऐसे ही एक २ महीनेमें एक २ राशि भोगा करते हैं बस जब कि लग्न मालूम होगई तो जिन २ भावोंमें ग्रहोंकी स्थिति सुनोगे उन २ ग्रहोंकी राशिस्थित जरूर जान पाओगे. उदाहरण–जैसे किसीने पूछा कि तुम्हारी राशिका नाम कौन है ? उन्होंने कहा कि चेतराम नाम है तो होडाचक्रसे मालूम भया कि अश्विनीके दूसरे चरणका जन्म और मेष राशिका चन्द्रमा द्वादशभावमें है जो राशि होती है उसीमें चन्द्रमा सदा रहता है. इसके बाद फिर पूछा

कि शनि, गुरु, राहु कहां हैं ! उन्होंने कहा कि शनि पंचम भावमें और गुरु राहु षष्ठभावमें है तो मालूम हुआ कि कन्या-के शनि और तुलाके बृहस्पति राहु हैं. बस पहिले कुल इतना जान लेनेसे सब नष्ट वर्षमासादि अर्थात् कुल नष्टकुण्डली बर्त सकते हो ॥ ६ ॥

मन्दजीवागुभिर्वर्षं वर्षाच्छाकं शका-त्सनम् ॥ ऋतुमासायनं सूर्यात्पक्षं चन्द्रादिनिर्दिशेत् ॥ ७॥

तारक छन्द ।

शनि औ गुरु राहुतें वर्ष बतावै । पुनि वर्षते शाक सनादिक गावे ॥ ऋतु मास सुऐन दिनेशते जानी । पुनि पक्ष कुपक्ष सुचंद्रते मानी ॥

अब शनि और बृहस्पति और राहु इनसे वर्ष और वर्षसे शाक और शाकेसे फस्ली और ईस्वी सन् और सूर्यसे अयन, ऋतु, मास और चन्द्रमासे दोनों पक्ष बतावे ॥ ७ ॥

तिथिं वारं च नक्षत्रं योगं करणमेव च । इष्टं दिवादिकं सर्वं द्रुतं नष्टं प्रवर्तयेत् ८॥

तिथि वार नक्षत्तर योग कर्ण। पुनि इष्ट दिवा-दिक भोग मर्ण॥ कहिहौं अशेष द्विज देवहेत। तिनके अशेष सुखके निकेत॥ ८॥

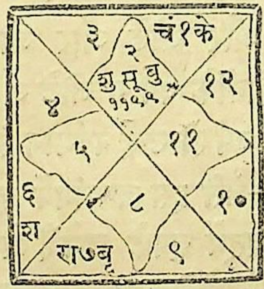
इसके बाद तिथि, वार नक्षत्र, योग, करण, इष्ट, दिन या रात्रिका जन्म आदि नष्ट बहुत शीघ्रमें बर्त दे॥ ८॥

जन्मांगचक्रस्थितमंदराशेः।
संयातसंवत्सरमंदराशिम्॥
गणेच्च सार्धद्वयवत्सरैश्च।
गुण्यात्तदंकं गतवत्सरं स्यात्॥ ९॥
जन्मांगजीवस्य तथा भचक्रं।
गुण्याच्च संवत्सरजीवराशिम्॥
एकैकमासप्रतिवर्षयोजिते।
स्फुटानि वर्षाणि वदेज्जनानाम्॥ १०॥
जन्मांगराहोर्गणयेत्तथैव।
संजातवर्षस्थभचक्रराहुम्॥

साधैंकवर्षेण च वर्षसंख्यां ।
गुण्यात्पुनर्वै हृदवत्सरं स्यात ॥११॥
शनिः समायाति पुनः स्वराशिं ।
वर्षाणि त्रिंशद्गदितानि मुक्त्वा ॥
राहुस्तथाष्टादशवत्सराणि ।
ह्येकैकवर्षं च गुरुः सुयुक्तम् ॥ १२ ॥
श्रीमद्विक्रमवत्सरेषु च बुधः संशोधयेद्वै यदा । शीघ्रं बाण (५) गुणे- (३) न्दु (१) वर्षनिलयं शाका भवेद्वै तदा ॥ शाकांकेषु च योजये- द्वसु (८) मुनी (७) स्याद्वै सनश्चेसवी तद्वै शोधितबाण (५) चन्द्र (१) विशिखै (५) फस्ली भवेद्वै सनः ॥ १३ ॥

कवित्त।

मन्द ९ औ १०बृहस्पति पुनि राहु केरी राशि-
नते; वर्तमान संवत् ग्रह राशिलौं गनावौं मैं ॥
मन्दकी अढाई वर्ष गनिकै बृहस्पति एक, राहु डेढ
उल्टो गनि बरषैं बनावौं मैं ॥ संवतसे शाको शालि-
वाहन बतावो चहै; एक सो पैंतिस घटै शेषको
सुनावौं मैं। पांचसौ पन्द्रह घटाय होत सन फसलि
सो, शाकेमें अठत्तरि जोरि ईसवी जनावौं मैं ॥९॥
॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥



अथ संवत्सरनिस्सारण।

जन्मकुण्डलीमें शनि जिस राशिके हों उसके आगेकी
राशिसे वर्तमान संवत्की राशितक गिने अढाई गुण करनेसे

गत वर्ष होता है । गत वर्षोंको वर्तमान संवत्में घटानेसे जन्मका संवत् निकलता है । उदाहरण–जैसे इस चेतरामके जन्मांगचक्रमें शनि कन्याके हैं, उसके आगेकी राशि तुला है उसस वर्तमान १९५१ के संवत्में शनि कन्या राशिके है तहां तक गिनै तो तुलासे कन्या तक बारह हुए.अढाई गुणा किया तो बारह अढाई तीस गत वर्ष हुए, इन तीस गत वर्षोंको वर्तमान संवत् १९५१ में घटानेसे १९२१ के संवत्का जन्म ठहरा ॥ ९ ॥

अथ पुष्टसंवत्करणम् ।

फिर ऐसेही जन्मांगके बृहस्पतिसे वर्षके बृहस्पतितक गिने और जो बृहस्पतिके अंश थोडे बीते हों तो जितने वर्ष हों उतने महीनोंके वर्ष और जोडे और जो बृहस्पतिके अंश बहुत बीते हों तो महीनोंके वर्ष न जोडे और उसमेंसे भी एक वर्ष निकाले जो गत वर्ष हों उन्हें वर्तमान संवत्में घटाय संवत् कह दे । उदाहरण–जैसे इस जन्मांगमें तुलाके बृहस्पति है और १९५१ के संवत्में वृषके लगे हैं तो वृश्चिकसे वृषतक ७ हुए और दो आवृत्तियोंसे २४ हुए सब एकतीस वर्ष हुए उसमेंभी एक वर्ष निकास डाला और कोई महीनेके वर्ष भी नहीं जोडे क्योंकि दोनों बृहस्पतिके बहुत अंश बीते हैं.इससे

तीस वर्ष कायम रहे. उनको संवत १९५१ में घटानेसे १९२१ के संवतका जन्म ठहरा ॥ १० ॥

अथ पुष्टसंवत्करणम् ।

फिर ऐसेही उलटा जन्मांगके राहुसे संवत्के राहुतक गिने और डेढ गुने करे जितने गत वर्ष हों उन्हें वर्तमान संवत्में घटावे तो संवत् हो । उदाहरण-जैसे चेतरामके जन्मांग राहु तुलाका है और १९५१ के संवत्का राहु मीनका है तो तुलासे वृश्चिक तक उलटा गिना तो बारह हुए, डेढगुणे बारह डचौढे अठारह वर्ष हुए,फिर तुलाहुईसे मीन तक उलटा गिना तो आठ डचौढे बारह हुए कुल एकमें जोडनेसे तीस वर्ष हुए उन्हें संवत् १९५१ में घटा देनेसे १९२१ के संवत्का जन्म ठहरा. इसमें राहुकी गतराशि नहीं कि वर्तमान राहुकी राशि गिनी काहेसे कि राहुके बहुत कम अंश बीते हैं ॥ ११ ॥

वर्षके जोडते समय यह बात जरूर याद रक्खे कि शनि अढाई २॥ वर्ष एक २ राशिको भोगता है और ३० वर्ष बाद उसी राशि पर फिर आता है, ऐसेही बृहस्पति तेरह २ महीने और बारह वर्ष बाद फिर उसी राशि पर आता है, ऐसे ही राहु डेढ २ वर्ष वक्र होके एक २ राशिको भोगा करता है और अठारह वर्ष बाद फिर उसी राशिपर आ जाता है ॥ १२ ॥

अथ संवत्से शाका निकालनेकी युक्ति ।

संवत्में १३५ घटानेसे शाका शालिवाहनीय निकलता है.

जैसे चेतरामका १९२१के संवत्का जन्म है उसीमें १३५ घटानेसे शालिवाहनीय शाका १७८६ हुआ. ऐसेही शाकेमें ७८ जोडनेसे ईसवी सन् और ५१५ घटानेसे फसली सन् होते हैं जैसे १७८६ के शाकामें ७८ जोडनेसे १८६४ ईसवी सन् और ५१५ घटानेसे १२७१ फसलीसन्का जन्म हुआ ॥१३॥

मकरादिभषट्सुसंस्थिते द्युमणावुदगयनं प्रचक्षते । कर्कादिभषट्सु वै यदा ह्ययनं दक्षिणकं वदेत्तदा ॥ १४ ॥

दोहा ।

मकरादिक षट्राशि रवि, उत्तर अयन बखानु ।
दक्षिणको पुनि अयन कहु, जब कर्कादिकभानु १४

अथ अयन कथन ।

मकरके सूर्यके कुछ पहिलेसे उत्तरायण और कर्कके सूर्यके कुछ पहिलेसे दक्षिणायन सूर्य होते हैं छः छः

महीना उत्तरायण दक्षिणायन होते हैं जैसे इस जन्मांग चक्रमें वृषके सूर्य्य उत्तरायणके हैं ॥ १४ ॥

सदा चैत्राद्गण्याद्युगयुगलमासान् रविमितान् वसंतादीश्चानन्त्रसपरिमितान्कोविदऋतून् ॥ तदा मासं ब्रूयाद्दिवसमणिराशिं यदि गणेत् सदा वैशाखाद्यादजमुखयुताद्राशिनिवहम् ॥ १५ ॥

दोहा।

चैत माससे मास सब, दुइ दुइ जो गनि लेय।
ऋतु वसंत आदिक छहों, क्रम क्रम ही कहि देय ॥

सोरठा।

मास तुरत कहि देय, उसही क्रमते समुझि हिय ॥
सूरज तक गनि लेय, मेष धरै वैशाखमें ॥ १५ ॥

अथ ऋतुजाननेकी युक्ति।

चैत्रसे दो २ करके बारहों महीने गिने क्रमसे वसंतादिक छहों ऋतु जाने। यथा चैत्र वैशाखमें वसंत (१), ज्येष्ठ

आषाढमें ग्रीष्म (२) श्रावण भादोंमें वर्षा (३) कुआर कार्तिकमें शरद् ४) अगहन पूषमें हेमंत (५) माह फाल्गुनमें शिशिर (६)। उदाहरण-जैसे चेतरामका ज्येष्ठका जन्म है तो ग्रीष्म हुई ॥

अथ मासजाननेकी युक्ति ।

मेषके सूर्यमें वैशाख सदा होता है इसी क्रमसे बारहों राशिके सूर्यमें बारहों महीना जानै। उदारहण-जैसे चेतरामका जन्म वृषके सूर्यका है तो ज्येष्ठका जन्म ठहरा ॥ १५ ॥

तथैव सूर्याद्गणयेच्च चंद्रं चेज्जायते सप्तमराशिवर्ती । तदा भवेज्जन्मनि शुक्लपक्षो ह्यतः परस्तात्प्रवदेच्च कृष्णम् ॥ १६ ॥

दोहा ।

सूर्यनते जो चन्द्रमा, सात राशिलौं होय ॥
शुक्लपक्ष वाको कहै, अधिक कृष्णको सोय॥१६॥

अथ पक्ष जाननेकी युक्ति ।

जिसके जन्मांगचक्रमें सूर्यसे सातराशिके भीतर चन्द्रमा हो तो शुक्लपक्षका जन्म और सातसे अधिक हो तो कृष्णपक्षका

जन्म जानिये। उदाहरण—जैसे चेतरामके जन्मांगचक्रमें सूर्यसे बारहें चन्द्रमा है इससे कृष्णपक्षका जन्म ठहरा ॥ १६ ॥

सदाऽमायुतो जन्मपत्र्यां रविः स्या-
त्तथा सार्धद्वे द्वे तिथिं यस्सुगुण्यात्॥
हिमांशोस्समीपं तिथिं यत्प्रसंख्यां
लभेतां वदेद्वाक्पतेस्सुप्रणीताम्॥१७॥

दोहा ।

होइ जहां रवि अमा तहँ, तिथी अढाई राखु ॥
क्रमहीं क्रम गनि चंद्रतक, जन्मकेरि तिथी भाखु॥

अथ जन्मकी तिथि जाननेकी युक्ति ।

जन्मांगचक्रमें जहां सूर्य हो तहां अमावस जानै, वहांसे हर कोठेमें अढाई २ तिथि समुझ चन्द्रमा तक गिन एकमें जोड जितने हों उतने बतावै। उदाहरण—चेतरामके जन्मांगचक्रके लग्नमें सूर्य वृष राशिके १८ अंशमें हैं इससे उस कोठेमें आधी तिथि छोडके दो तिथि समुझ देखा सूर्यसे चन्द्रमा बारहें अश्विनीके दूसरे चरणके हैं। इससे इसमें अढाईमेंकी एकभी तिथि नहीं ली क्योंकि चन्द्रमा अभी मेषमें आयाही है अंश बहुत

कम हैं और सूर्य चन्द्रमाके बीचमें १० कोठा हैं। उसकी दश अढाई पचीस तिथि हुई और दोलग्नकी सब सत्ताईसतिथि भई तिसमें १५ का भाग दीन्हेसे कृष्णपक्षकी द्वादशी ठहरी १७॥

मधोः सितात्संगणितं च मासं सार्धै-कगुण्यं गतवासराढ्यम् । भजेन्नगै ७ श्चापि गणेच्च शेषं वर्षेशवारात्स्फुट-वासरः स्यात् ॥ १८ ॥

सवैया ।

चैतसे मासहि डेरढकै गत पक्षहुके दिन लै उर धारै। शोधि भली विधि वा महँ जोरिकै सातसों भाग दै खूब विचारै ॥ राजहिंसे गनि वार कहै पुनि ज्यो-तिषको केहि काज निहारै । भै नहिं नेकहु चित्त धरै कहि पृच्छकको मन शोच निवारै ॥ १८ ॥

अथ जन्मके वार बतानेकी युक्ति।

चैत्रशुक्लकी परीवासे महीना गिन ड्योढा कर बीते पक्षके दिन उसीमें जोड दे सातका भाग ले जो शेष बचे सो राजासे

गिनके वार जानो । [चैत्र शुक्ल परिवाका जो दिन सो राजा कहाता है साल भरतक] उदाहरण—जैसे चेतरामका किस दिनका जन्म है सो ख्याल करो कि ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशीका जन्म है बुधके रोजका सो पहिले तो चैत्रशुक्ल (१) से गिना तो वैशाख वदी अमावसतक (१) महीना हुआ डचोढे किये डेढ हुआ बीते पक्षके दिन (२६) हुए कुल जोडे साढे सत्ताईस हुए सातसे भाग लेनेपर सात त्रिक (२१) हुए और बचे साढे छः तो उस सालके राजा बृहस्पतिसे गिना तो बुधके दुपहरके भीतरका जन्म ठहरा ॥ १८ ॥

कार्तिकाद्द्विगुणं मासं कृत्वा च तिथि-संयुतम् । सप्तभिश्च हरेद्भागं नक्षत्रं प्रवदेत्क्रमात् ॥ १९ ॥

दोधक छन्द ।

कार्तिक माससे दून करीजै । बीततिमासके रोज गनीजै ॥ एक जोरि सत्ताइस भागै । शेष नक्षत्र यथा क्रम लागै ॥ १९ ॥

अथ जन्मनक्षत्र जाननेकी युक्ति ।

कार्तिकसे महीना दुगुन करै, बीते पक्षके दिन जोडे एक और मिलावै, सत्ताईसका भाग दे जितने बचे वही जन्मनक्षत्र जाने अश्विनीसे गिन ले। उदाहरण—चेतरामका जन्म ज्येष्ठ १२ का है तो कार्तिकसे वैशाखतक महीना ७ हुए, दूने करनेपर १४ हुए, तिथि १२ मिलाई तो२६हुए, १ और मिलाया २७ हुए । उस पक्षमें १ नक्षत्रकी वृद्धि है इससे १ और मिलाया २८ हुए, २७ का भाग लिया १ बचा तो अश्विनी नक्षत्रका जन्म ठहरा ॥ १९ ॥ इति ॥

भानुभं गणयेत्पुष्याच्छ्रवणाच्चांद्रभं तथा । चैकीकृत्य क्रमाद्योगान्विष्कंभादीन्वदेत्क्रमात्॥२०॥

दोहा ।

पुष्यते रवि नक्षत्र गनि, श्रवण ऋक्षते चन्द ॥
सत्ताइसको भाग लै, योग कहत कविवृन्द॥२०॥

अथ विष्कंभादि योग बनानेकी युक्ति ।

पुष्य नक्षत्रसे सूर्यके नक्षत्रतक गने और श्रवणसे जिस दिनका योग जानना हो उस दिनके नक्षत्र तक गने इकट्ठा

करके २७ से भाग ले शेषको विष्कंभसे गन योग बतावे। उदाहरण—चेतरामका जन्म किस योगका है तो पुष्यसे सूर्य नक्षत्र रोहिणी तक २४ हुए और श्रवणसे जन्म नक्षत्र आश्विनी तक ७ हुए सब इकट्ठा करनेपर ३१ हुए २ से भाग लेनेपर७ बचे विष्कंभसे गिना तो सौभाग्य नाम योगका जन्म ठहरा२०

प्रथमतश्च तिथिं द्विगुणां चरे-
द्विगतभूमितिथिं मुनिभिर्भजेत् ॥
विदितशेषतिथिं विगणय्य च कर-
णमत्रबवादि वदेत्क्रमात् ॥ २१ ॥

छंद त्रिभंगी ।

दुगुनी तिथि करिये,एकहि गरिये, सातसों हरिये शेषनमें । बव आदिक जानिय, सातहु मानिय, कर्ण बखानिय देशनमें ॥ तिथि अर्ध कहावहिं अंतम धावहिं, आदिम आवहिं, आदिहिते ॥ रीति विशेषी, अद्भुत देखी, द्विजहितलेखी वादिहिते ॥ २१ ॥

अथ जन्मको करण जाननेकी युक्ति ।

जिस दिनका जन्म हो उसी तिथिको शुक्लपक्षकी परिवासे गिन दूना करे १ कम करे ७ से भाग ले जो शेष बचे उसे बवादिक ७ में क्रमसे करण जानै । शेष निकली तिथिके परार्द्धमें उस करण होगा और पूर्वार्द्धमें उस करणके पहिलेका करण होगा । उदाहरण–जैसे किसीकी जन्मतिथि कृष्णपक्षकी द्वादशी है तो शुक्लपक्षके परिवासे गिननेसे पूर्णमासी तक १५ हुए और १२ द्वादशाक १२ और मिलाये तो २७ हुए दूने करनेपर ५४ हुए, एक कम किया ५३ रहे, सातसे भाग लिया तो सातसती ४९ गये चारि बचे तो चौथा करण द्वादशीके परार्धमें ठहरा जिसका तैतिल नाम है; और पूर्वार्धमें उसके पहिलेको कौलव नाम करण कहदो, जरूर होगा ये ही ७ करण चर हैं ॥ २१ ॥

सदैव शुक्लप्रतिपद्दलद्वये स्थितौ हि किंस्तुघ्नबवौ क्रमेण वै । कृष्णे परे भूत(१४) तिथौ हि शाकुनिश्चतुष्पदो नागयुतः कुहूस्थितः ॥ २२ ॥

दोहा ।

शुक्ल एक किंस्तुघ्न बव, कृष्ण चतुर्दशि भाग ॥
पश्चिममें शकुनी करण, अमा चतुष्पद नाग ॥२२॥

चारों स्थिर करणोंके बनानेकी युक्ति ।

सदा शुक्लपक्षकी परीवाके पूर्वार्धमें किंस्तुघ्न और परार्धमें बवकरण होता है और कृष्णपक्षकी चौदशको परार्धमें शकुनि करण होता है और अमावसके पूर्वार्धमें चतुष्पद और परार्धमें नाग करण होता है ॥ २२ ॥

सूर्याल्लग्नं गणेद्धीमान्शरघ्नं कारयेद्बुधः । पश्चात्किञ्चिच्चरेन्न्यूनं क्षणादिष्टं प्रवर्तयेत् ॥ २३ ॥

दोहा ।

सूर्यनते गनि लग्न लघु, पांच २ को जोरि ॥
तामें दुइ घटिका घटै, इष्ट कहै भय छोरि ॥२३॥

अथ जन्मांगसे इष्ट जाननेकी युक्ति ।

जन्मांगके चक्रमें सूर्यसे लग्नतकके सब कोठोंमें पांच २ घडी मिलाके सब स्थानमें जोडि कुछ कम करके इष्ट कहै

जो लग्नमें सूर्य हों तो लग्नके जितने अंश बीते हों उसी हिसाबसे इष्ट कहै जो लग्नके ३० अंश बीते हों तो घडी कहै और १५ अंश हो तो अढाई घडी और जो साढे सात अंश हों तो सवा घडी इसी हिसाबसे इष्ट कहै और जो कम अंश लग्नके बीते हों तो पल जानें। उदाहरण—जैसे चेत-रामके जन्मांगचक्रमें लग्नमें सूर्य हैं और यहां संख्या कुछ नहीं है, वृष लग्नके केवल १।१८।९।३० हैं इससे (९) बीच, रहीं, इष्ट एकही घडीके भीतर है. देखा तो इष्ट० । ११ का ठहरा ॥ २३ ॥

जन्मांगस्थहिमांशुलग्नपतेर्गती गिनावों तुझे । स्याच्चेन्नंदगृहेऽथवा शरगृहे खाने अगर सातवें । तस्मा-द्धेहत्रिकोणकेपि च यदा पैदा हुआ वक्त हो, दृष्ट्वा वाक्पतिना स्फुटं विर-चितं होवै सही लग्न सो ॥ २४ ॥

छन्द भुजंगप्रयात ।

करै चांद जिस लग्नमें मालखाना ॥ तहांते गनै

बाण नन्दोंके खाना ॥ वहांसे गनै लग्न फिरि सात ईलौं। कहैं शुद्ध जो नन्द औ पांचईं तौं ॥२४॥

अथ लग्न शोधनेकी युक्ति।

चन्द्रमासे ९ या ९ तहांसे ७ या वहांसे ५ या ९ कोठोंके भीतर लग्न हो तो शुद्ध है। उदाहरण–यथा चेतरामके जन्मांगचक्रमें चन्द्रमासे ९ कोठा यथा बीच रहे दूसरे कोठेमें लग्न है इससे ये जन्मलग्न शुद्ध है इसी तरह जन्मांगचक्र शुद्ध करलेई इति ॥ २४ ॥

सूर्याच्च लग्नं यदि षड्गृहान्तरे भवेत्तदा जन्म दिवा वदेद्बुधः। स्यात्सप्तमे यस्य च तस्य सायं तदन्यथा चेज्जननं निशायाम् ॥ २५ ॥

नाराच छन्द।

सूर्य्यते जो लग्नहोय गेह षटके अन्तरे। तदा दिवाको जन्म होय सात सामके परे॥ आठसे लगाइ बारहों लगे लग्न रहै। तदा निशाके जन्मको तुरत है मगन्कहै ॥ २६ ॥

अथ दिन या रात्रिके जन्म जाननेकी युक्ति ।

सूर्यसे जो लग्न छः घरके अन्तरमें हो तो दिनका जन्म और जो सातवें हो तो सामका और आठसे बारह तककी हो तो रात्रिका जन्म और जो लग्नमें सूर्य हो तो प्रातःकाल जन्म है. इसी हिसाबसे दुपहर या अर्धरात्रि या और कोई वेला जो पूंछी जाय तो बता सकते हैं । उदाहरण—चेतराम के जन्मांगचक्रमें लग्नमें सूर्य हैं इससे प्रातःकालका जन्म ठहरा ॥ २५ ॥

रविराहुकुजांकानि लग्नांकेन च योजयेत् । त्रिभिर्भागावशेषे च खैके नारी द्वये पुमान् ॥ २६ ॥

मालिनी छन्द ।

रवि कुज तनु अंकै राहुके अंक जोरै । तुरतहि शिवनेत्रै भाग दे शेष कोरै ॥ कहति विषम १ खांके कन्यका केरि सोई । रहति यदि समांके २ पुत्रकी पत्र होई ॥ २६ ॥

अथ स्त्रीपुरुषका जन्मांग जाननेकी युक्ति।

सूर्य राहु मंगल ये तीनों ग्रह जिन जिन राशिके अंकोंमें हों उन तीनों अंकोंको और जन्म लग्नको एकमें जोड ३ से भाग ले, जो शेष एक या शून्य बचे तो स्त्रीकी और जो दो बचें तो पुरुषकी जन्म पत्री जाननी. कोई कोई आचार्य मंगलकी राशिके अंक नहीं जोरते हैं। उदाहरण–जैसे चेतरामके लिखे जन्मांगचक्रमें देखो कि रविके दो अंक हैं और राहुके सात हैं और मंगलके बारह और लग्नके दो ये सब एकमें जोडे तो २३ हुए तीनसे भाग लिया तो तीन सत्ते२१ और दो तेईस२ बचे तो यह जन्मपत्र पुरुषहीका ठहरा इति ॥ २६ ॥

प्रश्नांकरंध्रस्थभजन्मलग्नमेकत्र युक्तं वसुनाथगुण्यम्।लग्नेशभक्तं समशून्यशेषे मृतं भवेज्जीवितमन्यथात्वे२७

गीतिका छन्द।

जब प्रश्नकर्तृक अंकको निःशंक जनममें जोरिहो। तब अष्टमस्थभयुक्तकै वसुनाथ गुणके बहोरि हो ॥ लग्नेश भक्त हरन्तके सम शून्य बचतहि

माखिये । यमलोक वसति सुकर्मके विषमें सुजी-
वित भाषिये ॥ २७ ॥

मृतजीवित मनुष्यके जन्मांगका ज्ञान ।

प्रथम यह कि जब कोई प्रश्न करे कि यह जन्मपत्र मरेका है या जीवित पुरुषका तब उसी प्रश्नलग्नके अंकको लिख ले फिर अष्टम भावका अंक और जन्मलग्नका अंक इकट्टा जोरे, अष्टमेशसे गुणे और लग्नेशसे भाग दे जो सम या शून्य बचे तो मरे मनुष्यका, जो विषम बचे तो जीवित मनुष्यका जन्मपत्र जानिये । उदाहरण—जैसे किसीने पूछा कि कहो इस जन्मपत्रवाला जीता है या मरा तो देखा कि उस समय प्रश्नलग्न कन्या है और अष्टम भावका अंक९और जन्म लग्नांक २ सब जोडे १७ हुए अष्टमेश बृहस्पति अर्थात ९ से गुणा तो ८९ हुए और लग्नेश शुक्र अर्थात् ६ से भाग लिया तो एक बचा कहा कि कुण्डलीवाला जियत है ॥ २७ ॥

मात्राश्चतुर्गुणा नाम्नो द्विगुणाक्षर-
संयुताः । त्रिभिर्भक्ता द्विशेष स्त्री
म्रियते खे० क १ योः पुमान्॥२८॥

वसन्ततिलका छन्द ।

नामांक अक्षर गनै दुगुना करै जो । मात्रांक चौगुन धरै लगुना टरै सो ॥ पै तीनिसे पुनि हरै खइकै परै जो।नाशे पती युग पर तिरिया मरै सो॥२८॥

अथ स्त्रीपुरुषमें कौन पहिले मरे यह जाननेकी युक्ति ।

स्त्री पुरुष दोनोंके नामके अक्षर दूने करे और मात्रा चौगुनी करे तीनसे भाग ले जो दो बचे तो स्त्री पहिले मरी और जो एक या शून्य बचैं तो पहिले पुरुष मरेगा अब मात्रा पहिचाननेकी युक्ति लिखते हैं—कि ह्रस्व अक्षरमें १मात्रा और दीर्घमें दो और प्लुत अर्थात् गोहरातेमें जौन अक्षर अंतका देर तक कहा जाय उसमें (३) और जो स्वरहीन हो तो उसमें आधी मात्रा होती है ऐसे जोडके कह दे ॥ २८ ॥

त्रयं तिथौ कृतं मासे दिग्ज १० न्म क्षे च योजिते । लग्ने शरं ५ गुणं ३ वारे जन्माद्गर्भस्य लक्षणम् ॥ २९ ॥

तोटक छंद ।

तिथिमें जब तीन मिलाइ कहौ । पुनि मासनमें बत वेद ४ चहौ ॥ दश जोरि नखत्रमें लुरौ ।

शर९लग्नमें मेलि धरै फुरतै ॥ जब वारमें तीनि मिलाइ सही । तब जन्मते गर्भ तुरंत कही॥यह रीति द्विजातिनके हितकी। सभि भाषि दई अपने चितकी ॥ २९ ॥

अथ जन्मसे गर्भका दिन बतानेकी युक्ति ।

जन्मकी तिथिमें ३ जन्मके महीनेमें४जन्मनक्षत्रमें १०, जन्मलग्नमें ९ और जन्मवारमें ३ जोडे जो जो तिथि आदि निकले गर्भके बतावे । उदाहरण—चेतरामकी जन्मतिथि १२ उसमें ३ मिलानेसे कृ० प० की १४ और जन्मका महीना ज्येष्ठ उसमें ४ मिलानेसे भादों और जन्मका नक्षत्र१तिसमें १० मिला देनेसे मघा और जन्म लग्न वृष उसमें ९ मिलानेसे कन्या और जन्मवार बुध उसमें ३ मिलानेसे शुक्रवारका गर्भ ठहरा ॥ २९ ॥

तिथिं वारं च नक्षत्रंनामाक्षरसमन्वितम् । मुनि (७) भक्तं समे शेषे कन्या च विषमे सुतः ॥ ३० ॥

मोदक छन्द।

वार तिथी अरु ऋक्ष मिलावहि। नाम सुगर्भवतीकहँ पावहि॥जोरत सातक भागु समे पुनि। जानि सुता विषमें सुतकी गुनि॥ ३० ॥

अथ गर्भवतीके पुत्र कन्या बतानेकी युक्ति।

जिस समय कोई प्रश्न करै कि अमुक स्त्रीके पुत्र होगा या कन्या तब उसी समयके तिथि, वार, नक्षत्रोंको एकमें जोडे उसमें उस गर्भवती स्त्रीके नामके अक्षर मिलाय सातसे भाग ले जो सम बचैं तो कन्या और जो विषम बचैं तो पुत्र पैदा हो ॥ ३० ॥

मुखे तिलं यस्य च तस्य लिंगे ह्यक्ष्णोरधस्तस्य च कुक्षिगं स्यात्। भुजे भवेत्तस्य च मूलजन्म पूर्वाद्वितीये जननं सुदेहे ॥ ३१ ॥

रोला छन्द।

देखिके मुख मध्यमें तिल लिंगमें कहिदेहु। अक्षिणी

तरजिमि हेरिकै तेहि कुक्षिमें पुनि लेहु ॥ होइ जो भुज मध्यमें तिल मूल जन्म बिखांनु । पूर्वा अषाढै जानि नर सो ल्हसून अंगम जानु॥३१॥

अथ गुप्त तिलादिक जाननेकी युक्ति ।

जिस मनुष्यके मुखपर तिल हो उसके लिंग या योनिपर तिल जरूर होगा कह दो । जिसके आँखके नीचे तिल हो उसकी कोखमें और जिसके भुजापर तिल हो उसका मूलका जन्म और जिसका पूर्वाषाढा नक्षत्रका जन्म हो उसके अंगमें कहीं लहसुन होगा, समझके कहदो ॥ ३१ ॥

इति मे कथितं सर्वं जातकं नष्टवर्तनम् ॥ सर्वेषां सुखदं साक्षाद्ब्रह्माश्चर्यकरं परम् ॥ ३२ ॥

दोहा ।

इहां लगे सब बर्त्तिबो,नष्टकेर कहि दीन्ह । विद्वज्जन सुखदाइ अति, बहु अचिर्य्यमत कीन्ह ॥३२॥

यहांतक सब नष्ट जन्मपत्र वर्तनेकी युक्ति कहदी जिसमें खुलासा बहुत आश्चर्य कारक सर्व मनुष्योंके सुखदायी अनेक विधिसे रीतियां कही हैं ॥ ३२ ॥

इति श्रीश्रीमन्महाराजत्रिपाठिविद्वद्वरजीवरक्षणसुत पंडितवाचस्पति विरचिता नष्टजन्मांगदीपिका समाप्ता ॥ शुभमस्तु ॥

श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ श्रीः ॥



अँग्रेजीक्यालंडर।

विदित हो कि, हरसाल "क्यालंडर" सब बनाते हैं और छपाते हैं, बार बार परिश्रम करना पडता है ऐसा बार २ परिश्रम देखके सहस्रावधि वर्षोंका यह क्या-लंडर हमने बनाया है इसमें हरएक सन् महीना तारी-ख पर वार तथा वार पर तारीखें निश्चित होती हैं, यद्यपि "क्यालंडर" कई जगह जंत्रियोंमें छपे हैं परंतु सन् १९०० में फरवरी २८ ता० की होनेसे सब क्यालंडर लक्षावधि वर्षोंके बनाये हुए अशुद्ध होगये हैं फिर उन क्यालंडरोंके देखनेकी (क्रिया) बडी कठिनतासे मालूम होती है. हरएक मनुष्यके समझमें आना मुश्किल है इसकी क्रिया बहुतही सरल है (जान-नेकी क्रिया) ईस्वी सन् शताब्दोंके ऊपर जितने अंक हों वेही अंक प्रथम चक्रके दोनों भागोंमें जिस पंक्तिमें हों वही पंक्ति अक्षरोंकी तरफ लेजाना । और प्रथम

चक्र उसी भागके उपरिगत शताब्द जिस पंक्तिमें होवे वही पंक्ति नीचे अक्षरोंकी तरफ लेजाना। दोनों पंक्ति जिस अक्षरके माथे आवें वही अक्षर उसी सन्‌का अधिपति जानना। दूसरे चक्र क्यालंडरमें वर्तमान मासकी पंक्तिमें जिस स्थानमें सन्‌का अधिपति अक्षर हो वही अक्षरकी पंक्ति नीचे वारोंकी तरफ लेजाना। और वर्तमान तारीखकी पंक्ति वारोंकी तरफ लेजाना। दोनों पंक्ति जिस वारके माथे आवें वही वार उसी तारीखका जानना॥ उदाहरण—प्रश्न—सन १८९७ मई महीनेकी १२ तारीख किस वारकी होवेगी? **उत्तर**—यहां सन् १८०० शताब्द और ९७ अंकका है प्रथम चक्रके प्रथम भागमें अंक ९७ की पंक्ति और प्रथम चक्रके उसी प्रथम भागमें उपरि शताब्द १८०० की पंक्ति दोनों पंक्ति "स" अक्षरके माथे आगई सन् १८९७

का अधिपति " स " अक्षर जानना ॥ दूसरे चक्र क्यालंडरमेंकी पंक्तिमें " स " का अक्षर पांचवे स्थानवाली पंक्तिमें हैं अब वारोंकी तरफ पांचवीं पंक्ति और १२ तारीखकी पंक्ति बुध वारके माथे आगई । सन् १८९७ में मईकी १२ तारीख बुधवारकी है यही क्रिया हरएक सालमें (गतआगामी) सन्के लिये है। सन्का अधिपति अक्षर याद रक्खो वही अक्षर १२ महीनातक काम देवेगा (वृद्धिसन् जाननेकी क्रिया) जिस सन्को ४ के भाग देनेसे पूर्ण शेष रहे उस सालमें वृद्धि (फरवरी २९ की) जानना । और जब पूर्ण शताब्द हो तब उन शताब्दोंको ४०० का भाग देना पूर्ण शेष रहे उन शताब्दोंके सालमें वृद्धि (फरवरी २९ की) जानना । जिस सालमें वृद्धि आवे उस सालमें " वृद्धि जनवरी " और " वृद्धि फरवरी " दूसरे चक्रके जिस

पंक्तिमें हो वही पंक्ति जनवरीकी और फरवरीकी लेनी चाहिये--

वृद्धि सन्।

४—८—१२—१६।२०।२४।२८।३२।३६।४०।
४४।४८।५२।५६।६०।६४।६८।७२।७६।८०।
८४।८८।९२।९६।४००।८००।१२००।१६००।
२०००।२४००।२८००।३२००।३६००।

मिश्र रूपिचंद जेसाराम,
कंडयारो.

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापखानेकी परमोपयोगी, स्वच्छ, शुद्ध और सस्ती पुस्तकें।

यह विषय आज ४०।५० वर्षसे अधिक हुआ, भारतवर्षमें प्रसिद्ध है कि, इस यन्त्रालयकी छपी हुई पुस्तकें सर्वोत्तम और सुन्दर प्रतीत तथा प्रमाणित हुई हैं । इस यन्त्रालयमें प्रत्येक विषयकी पुस्तकें जैसे—वैदिक, वेदान्त, पुराण, धर्मशास्त्र, न्याय, मीमांसा, छन्द, ज्योतिष, साम्प्रदायिक, काव्य, अलंकार, चम्पू, नाटक, कोष, वैद्यक तथा स्तोत्रादि संस्कृत और हिन्दी भाषाकी प्रत्येक अवसरपर बिक्रीके अर्थ तैयार रहती हैं । शुद्धता, स्वच्छता तथा कागजकी उत्तमता और जिल्दकी बँधाई देशभरमें विख्यात है । इतनी उत्तमता होनेपर भी दाम बहुत ही सस्ते रक्खे गये हैं और कमीशन भी पृथक् काट दिया जाता है । ऐसी सरलता पाठकोंको मिलना असम्भव है । संस्कृत तथा हिन्दीके रसिकोंको अवश्य अपनी अपनी आवश्यकतानुसार पुस्तकोंके मँगानेमें त्रुटि न करनी चाहिये । ऐसा उत्तम, सस्ता और शुद्ध माल दूसरी जगह मिलना असम्भव है. —) का टिकट भेजकर 'सूचीपत्र' मँगा देखो ।

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, बम्बई.